रासलीला

प्रेम का मण्डल

'भागवतपुराण' की एक कथा पर आधारित

आमुख

भगवान श्रीकृष्ण, गोपियों और रासलीला की कहानी भारत में सदियों से सुनाई जाती रही है। यह कथा 'हरिवंश', 'विष्णुपुराण', 'भागवतपुराण' और 'गीतगोविन्द' जैसे महान शास्त्रों में मिलती है, और इनमें से कुछ भाग चौथी शताब्दी से भी पहले के हैं। ये शास्त्र भगवान श्रीकृष्ण का वर्णन भगवान श्रीविष्णु के एक अवतार के रूप में करते हैं जो ब्रह्माण्ड की पालनकारी शक्ति हैं और जब-जब धर्म पर संकट आता है तब-तब वे अवतार लेते हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म राजधानी मथुरा में यदुकुल के राजवंश में हुआ था। उनके माता-पिता उनके जन्म के समय, उनके मामा क्रूर कंस के बन्दी थे। कंस ने वहाँ के राजा का राजसिंहासन छीन लिया था। मध्यरात्रि को जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ तब सभी पहरेदार गहरी निद्रा में चले गए और बन्दीगृह के द्वार अपने आप खुल गए। बालकृष्ण के पिता वसुदेव अपने पुत्र को एक टोकरी में रखकर, चोरी-छिपे उन्हें यमुना नदी के दूसरे तट पर एक सुदूर क्षेत्र ले गए ताकि वे उसे कंस से सुरक्षित रख सकें। वसुदेव जी टोकरी को अपने सिर पर रखकर तेज़ बहती यमुना की प्रचण्ड लहरों से श्रीकृष्ण को बचाते हुए नदी के पार गोकुल ले गए थे। वहाँ गोकुल में ग्वाल-दम्पति यशोदा और नन्दबाबा ने बड़े लाड़-प्यार से बालकृष्ण का लालन-पालन किया। अन्य बालकों के साथ, कृष्ण भी गौओं की देखभाल करते-करते बड़े हुए—अपने ग्वाल-मित्रों के साथ वे शीतल नदी में स्नान करने जाते, पेड़ों की शाखाओं पर झूलते, इस तरह गोकुल में श्रीकृष्ण बड़े हुए।

श्रीकृष्ण को सभी अत्यन्त नटखट व मनोहर बालक के रूप में जानते थे, परन्तु वृन्दावन के लोगों के बीच बड़े होने पर भी अधिकांशतः लोग उनके दिव्य स्वरूप के बारे में काफ़ी कम जानते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि श्रीकृष्ण में माया की शक्ति को प्रकट कर अपनी सच्ची पहचान छिपाने की सामर्थ्य थी।

रासलीला उस समय की कहानी है जब उन्होंने अपने दैवी स्वरूप को प्रकट किया था। 'रास' वह नृत्य है जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रचाया था। गुजरात में किया जाने वाला

परम्परागत नृत्य 'रास-गरबा' इसी की अभिव्यक्ति है। 'लीला' का अर्थ है, 'खेल' या 'क्रीड़ा'। अतः 'रासलीला' का अर्थ है, 'नृत्य की क्रीड़ा' और यह दिव्य प्रेम की लीला [दिव्य प्रेम का नृत्य] के रूप में भी जाना जाता है। रासलीला की यह कथा हर स्थान के जिज्ञासुओं को भगवान के स्वरूप के बारे में और आत्मिक ऐक्य के लिए मानव की ललक के बारे में समझाती है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।